RAN-2101000102050035

RAN-2101000102050035

F.Y.B.A. (Sem. II) Examination October - 2023

Hindi - 3 A (Subsidiary)

Adhunik Hindi Kavya Sarita

સૂચના : / Instructions

(૧) **નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.**
Fill up strictly the details of ☛ signs on your answer book

Name of the Examination:

☛ **F.Y.B.A. (Sem. II)**

Name of the Subject :

☛ **Hindi - 3 A (Subsidiary) Adhunik Hindi Kavya Sarita**

Subject Code No.: **2101000102050035**

Seat No.:

Student's Signature

प्रश्न–1. निम्नलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों के सही उत्तर दिजिए। (10)

1) 'हिमाद्री तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती ..... स्वतंत्रता पुकारती'।
रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

(अ) समुज्ज्वलास्वयं प्रभा (ब) स्वयं स्वभा समुज्ज्वला

(क) स्वयंप्रभासमुज्ज्वला (ड) स्वयं दिव्य समुज्ज्वला

2) प्रात:काल का स्वागत कौन करता है?

(अ) तरुवासिनी (ब) नभचारिणी

(क) चिडियाँ (ड) उपर्युक्त सभी

3) हरिवंशराय बच्चनजी कौन से वाद के प्रवर्तक है?

(अ) छायावाद (ब) हालावाद

(क) प्रगतिवाद (ड) प्रयोगवाद

4) अज्ञेयजी का पूरा नाम क्या है?

(अ) हिरानंद वात्सायन सच्चिदानंद (ब) वात्सायन सच्चिदानंद हिरानंद

(क) सच्चिदानंद हिरानंद वात्स्यायन (ड) हिरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन

5) 'वे और तुम' कविता में किसका चित्रण है?

(अ) श्रमिक (ब) मजदूर

(क) किसान (ड) उपर्युक्त सभी

प्रश्न–2. 'शेरसिंह का शस्त्र–समर्पण' कविता में व्यक्त विचार अपने शब्दो में स्पष्ट कीजिए। **(13)**

अथवा

''कुकुरमुत्ता'कविता में निरालाजी ने सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति एवं शोषकवर्ग के प्रति आक्रोश का चित्रण किया गया है।'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए **(13)**

प्रश्न–3. 'मैं नीर भरी दु:ख की बदली' कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए। **(13)**

अथवा

प्रश्न–3. ''भीष्म का पश्चाताप' कविता में पितामह भीष्म की मन:व्यथा का चित्रण किया गया है।'' इस कथन को सिद्ध कीजिए।

प्रश्न–4.(अ) **टिप्पणी लिखिए: (किन्ही एक)** **(07)**

1. बसंत की अगवानी कविता का भावार्थ।

अथवा

1. साँझ का बादल कविता में चित्रित संदेश।

(ब) ससंदर्भ व्याख्या लिखिए (किन्ही एक) **(07)**

(1) ''जी, माल देखिए दाम बताऊँगा,
बेकाम नहीं है, काम बताऊँगा,
कुछ गीत लिखे है मस्ती में मैंने,
कुछ गीत लिखे है पस्ती में मैंने।''

अथवा

(1) ''अपमानों को मौन झेलता, चिर–अपमानित,
पथ के एक अओर चुपचाप खडा है।
फटे–हाल जीवन की नंगी कठिन दीनता–सा जो वर्जित वह बबूल है।
वृक्षों के अभिजात वर्ग की आँखो में वह सदा बहिष्कृत,
चिर - निर्वासित।''